

ए हिस्ट्री ऑफ़ फ़िलॉसफ़ी 64 अमेरिकन प्रैग्मैटिज़्म, व्हीटन कॉलेज के डॉ. आर्थर होम्स द्वारा

शुक्रवार को घंटे के आखिर में, जब हमने व्हाइटहेड, साइंस एंड द मॉडर्न वर्ल्ड पर कुछ कमेंट्स किए, तो कहा कि हम आज शुरू में ही कुछ समय निकालकर आपकी पसंद की किसी भी चर्चा के लिए बात करेंगे। तो यह समझते हुए कि सोमवार को गरमागरम बचा हुआ खाना हमेशा ऐसी चीज़ें नहीं होतीं जिनके लिए हम तैयार हों, यह, उस बदलाव को शॉर्ट में बताने के लिए जो पहले हुआ है, कम से कम क्लासिकल मेटाफ़िज़िक्स से, सब्सटेंस के बजाय, किसी सब्सटेंस की कोई हमेशा रहने वाली पहचान जो आखिरी सच्चाई है, उसका प्रोसेस है। और इंग्रीडिएंट्स वे घटनाएँ हैं जो आती-जाती रहती हैं।

तो लंबे समय तक कोई पक्की पहचान नहीं है, हालांकि लंबी, फैली हुई घटनाओं में पक्के तनाव होते हैं। आखिर, कॉसमॉस का इतिहास एक लंबी घटना है। बदलाव, बेशक, 18वीं सदी के मैकेनिस्ट मॉडल से ऑर्गेनिक मॉडल में है, अगर आप इस मामले को मॉडल 1, मॉडल 2, मॉडल 3 के साथ सोच रहे हैं। तो यह 19वीं सदी में नए साइंस का डेवलपमेंट है, डेवलपमेंटल बायोलॉजी, जीवन की मैकेनिस्टिक एक्सप्लेनेशन के अलावा कुछ और, और रिलेटिविटी फिजिक्स, एनर्जिस्टिक फिजिक्स, मैटर की सॉलिडिटी को तोड़ना, वगैरह।

और इसलिए उस ज़्यादा ऑर्गेनिक, अगर आपको पसंद हो, रिलेशनल मॉडल में, यह ध्यान देने लायक है, शायद, कि व्हाइटहेड एक क्वांटिटेटिव प्लूरलिस्ट बने हुए हैं, यानी, इस मामले में कि कितने इवेंट्स हैं। ज़ाहिर है, बहुत सारे, बहुत सारे, बहुत सारे इवेंट्स। कितने प्रोसेस हैं? ओह, अनगिनत प्रोसेस।

वह नंबर के हिसाब से क्वांटिटेटिव प्लूरलिस्ट हैं। लेकिन उन घटनाओं और प्रोसेस के नेचर के हिसाब से, वे सभी असल में एक ही हैं, क्वालिटेटिव मोनिज़्म। इसलिए किसी घटना का वही डिस्क्रिप्शन भगवान पर और हमारे किसी खास सेंस परसेप्शन पर लागू होता है।

तो क्वालिटेटिव मोनिज़्म। मुझे लगता है कि यही उनकी कुछ समस्याओं की जड़ है, कि वे भगवान और दुनिया के बीच क्वालिटेटिव अंतर को कम महत्व देते हैं। और फिर, अगर आप चाहें, तो इंसान और कुदरती चीज़ों के बीच।

इंसान, एक तरह से, एक कुदरती चीज़ है। लोगों में कुछ खास बात होती है। तो यह वह क्वालिटेटिव मोनिज़्म है जो बहुत ज़्यादा जनरलाइज़ करता है और हर चीज़ को एक ही प्रोसेस में ले आता है।

मैकेनिस्ट मॉडल में, बेशक, बाहरी संबंध थे, जैसे डेसकार्टेस के मन-शरीर डुअलिज़्म के कारण-कार्य संबंध में थे। ऑर्गेनिक मॉडल में, संबंध अंदरूनी होते हैं और रिश्ते की शर्तों की तरह ही होते हैं। अंदरूनी संबंध।

बाहरी रिश्तों की वजह से, 18वीं सदी ज्ञान की पूरी ऑब्जेक्टिविटी की तलाश करने और उसका दावा करने में कामयाब रही। आप देखिए, मन डेटा का एक पैसिव रिसीवर है। और जब कांट ने उस गड़बड़ को बिगाड़ दिया, तो जब तक आप व्हाइटहेड तक पहुँचते हैं, तब तक सब्जेक्ट-ऑब्जेक्ट कंटिन्युअम बन जाता है।

खैर, कहने का मतलब है, हर जानने वाली सिचुएशन में, मैं यहाँ इस कोड पर ठोकर खा रहा हूँ। हर जानने वाली सिचुएशन में, नया डेटा आने से पहले ही पहले की घटनाओं का योगदान होता है। और इसके अलावा, नई घटना में दी जाने वाली हमेशा की संभावनाओं के हिसाब से फैसला लिया जाता है।

में सब्जेक्टिव के साथ-साथ ऑब्जेक्टिव भी योगदान देते हैं। और बेशक, व्हाइटहेड के लिए सबसे बड़ी चिंता मैकेनिस्टिक नज़रिए में फैक्ट-वैल्यू का सेपरेशन है, जो व्हाइटहेड को ISCI के ओवरऑल टेलियोलॉजिकल नेचर में फैक्ट और वैल्यू की एकता का रास्ता देता है। और ज़ाहिर है, यहाँ बहुत कुछ है जो बहुत ज़रूरी है।

मुझे यह बहुत मददगार लगा। फैक्ट-वैल्यू सेपरेशन की उनकी आलोचना। और फिर मैकेनिस्टिक मॉडल की उनकी आलोचना।

मेरी शिकायत ऑर्गेनिक मॉडल के उनके यूनिवर्सलाइज़ेशन के बारे में है, जिस तरह से वे इसे बताते हैं। मुझे लगता है कि जैसे इस परंपरा में ज़्यादातर लोग कहेंगे कि ऑर्गेनिक मॉडल, अब इसे वापस ले लो, मैकेनिस्टिक मॉडल कुछ ऐसी चीज़ों पर लागू हो सकता है जो सच में काफी मैकेनिकली काम करती हैं। और ऑर्गेनिक मॉडल, ठीक है, मैकेनिस्टिक घटनाओं के मामले में एक ओवरआर्चिंग चीज़ हो सकती है।

लगता है कि किसी और चीज़ की ज़रूरत है, एक ज़्यादा पर्सनलिस्टिक मॉडल की। और मुझे लगता है कि कुछ पर्सनलिस्टिक एग्ज़िस्टेंशियलिज़्म में आपको ऐसी ही चीज़ मिलती है। कीर्केगार्ड, मार्टिन बुबर, वगैरह जैसे लोग, इंसान की कैटेगरी को बाकी सब चीज़ों से अलग दिखाने की कोशिश कर रहे हैं।

वह किसी इंसान के लिए बस इतना ही कर सकते हैं कि कहें कि आप और मैं, याददाश्त के दबाव के हिसाब से कंटिन्यूटी रखते हैं, जो सालों से इस अनुभव की धारा में कुछ खासियतें बनाए रखती है, जो आप हैं, अनुभव की धारा से चलने वाली पर्सनल पहचान। और यह एक तरह की पहचान है। असल में, ऐसे आर्टिकल लिखे गए हैं जिनमें कहा गया है कि व्हाइटहेड का एथिक असल में किसी को भी ज़िम्मेदार ठहराने का कोई आधार नहीं देता, सिर्फ़ इसलिए कि एक के बाद एक होने वाली घटनाओं के पीछे कोई एक लगातार एजेंट नहीं होता।

आज किसे बीते हुए कल के लिए, या शायद बीते हुए कल के लिए भी ज़िम्मेदार ठहराया जा सकता है? तो इस तरह की नैतिकता में कुछ दिक्कतें आती हैं। खैर, पिछले पूरे हफ़्ते हम जिस बारे में बात कर रहे थे, उसका यही निचोड़ है। क्या आप इसे आगे बढ़ाना चाहते हैं? या वीकेंड के बाद यह ठंडा पड़ जाएगा? जेनेल।

असलियत के तौर पर वह जिस चीज़ का पीछा करते हैं, उसके बारे में बात करते हुए, मुझे ऐसा लगता है कि यह एक तरह की भावना है कि यह एक प्रोसेस है। और फिर भी, वह कहते हैं कि आप गलत जगह नहीं जाना चाहते, आप नहीं चाहते कि गलती ठोस चीज़ को गलत जगह पर ले जाए। यह प्रोसेस बहुत एब्सट्रैक्ट लगता है।

और फिर मैं वापस गया और कैटेगरी, अल्टीमेट को, ऐसी चीज़ के तौर पर देखा जो हर चीज़ में धड़कती है। लेकिन यह धड़कन और क्रिएटिविटी मेरे लिए अभी भी एब्सट्रैक्ट हैं। और फिर भी, वह इसे ठोस रूप देते हैं।

मुझे हैरानी है कि क्या आप 'एब्सट्रैक्ट' शब्द का इस्तेमाल उससे अलग मतलब में कर रहे हैं। मुझे हैरानी है कि क्या आप यह कह रहे हैं कि यह एक नया कॉन्सेप्ट है, जिसे मैं अभी भी ठीक से समझ नहीं पाया हूँ। 'एब्सट्रैक्ट' इस मतलब में कि मुझे इसे तुरंत अनुभव की गई चीज़ के तौर पर समझने में मुश्किल होती है।

जबकि, मुझे लगता है कि वह 'एब्सट्रैक्ट' शब्द का इस्तेमाल यह कहने के लिए करेंगे कि यह एक मेंटल कंस्ट्रक्ट है जिसका अनुभव से कोई लेना-देना नहीं है। जबकि प्रोसेस, जैसा कि वह बताते हैं, उनका मानना है, असल में अनुभव का डिस्क्रिप्टिव है। आपने असल में उस डिस्क्रिप्टिव को आत्मसात नहीं किया है।

शायद वह यही कहता। क्या आप समझे? शब्दों को शब्दों से आगे बढ़कर अनुभव को सच में दिखाने में थोड़ा समय लगता है। आप यह देखने की कोशिश कर सकते हैं कि किसी घटना का उसका ब्यौरा, इंद्रियों के एहसास के पल के अलावा दूसरी चीज़ों पर भी लागू होता है या नहीं।

उदाहरण के लिए, एक घटना को लें, जैसे आप क्या कहना चाहते हैं, पहली बार कॉलेज जाना। क्या आपको वह घटना याद है? मुझे लगता है कि आपको याद होगी। अजीब लगा, लगा।

आप टीनएज वाली अजीब हरकतों, सेल्फ-कॉन्फिडेंस और पूरी तरह से अनिश्चितता और डर के अजीब कॉम्बिनेशन के साथ आए थे। खैर, ओपन-एंडेड इवेंट, आप समझ रहे हैं। दूसरे शब्दों में, आप एक हिस्ट्री, कुछ लगातार अनुभव के साथ आए हैं जो दिया गया है।

फिर आपको ऑब्जेक्टिव डेटा मिलता है। जैसे क्या? खैर, ओरिएंटेशन वाली बात। एक अनजान कैम्पस में अपना रास्ता ढूँढना।

टीचर जो आपसे उम्मीद करते हैं कि आप अकेले काम करें। चाहे कुछ भी हो। और ये सभी हॉपर में फिट हो जाते हैं, और इससे कई तरह की संभावनाएं निकल सकती हैं।

एक संभावना यह है कि आप सभी चीज़ों में से कोई आदर्श, कोई लक्ष्य चुनें जिसे आप पूरा करना चाहते हैं। आप सभी फालतू चीज़ों में नहीं उलझेंगे। आप शिक्षा प्राप्त करेंगे।

सब्जेक्टिव लक्ष्य। फ़ैसला। और इस तरह रास्ता तय हो जाता है।

यही घटना है। और फिर आप इसके बाद होने वाली घटनाओं के बारे में बता सकते हैं। यहाँ, एक फ्रेशमैन के तौर पर, आप फिलॉसफी 101 में हैं।

उस कोर्स का ऑब्जेक्टिव डेटा। आप अपने अंदर इसका क्या करने वाले हैं ? और व्हाइटहेड के लिए, ज़रूरी यह नहीं है कि आप इसके साथ क्या करते हैं, यूटिलिटी स्टाइल में, बल्कि यह है कि आप इसे अपने अंदर कैसे समाहित करते हैं। यह आपको क्या बनाता है? यह आपके साथ क्या करता है? कई तरह की संभावनाएं हैं।

और बहुत कुछ उस फ़ैसले पर निर्भर करता है, चाहे वह सोच-समझकर लिया गया हो या नहीं, जो उन संभावनाओं में से चुनता है। अगर आप किसी घटना को ऑब्जेक्टिव डेटा के उस आसान तरीके से बताते हैं, तो वह बहुत बड़े पैमाने पर लागू होता है। मुझे लगता है कि अगर आपको वह जानकारी एब्सट्रैक्ट लगे, तो आप कहेंगे, इस पर सोचिए, और क्या यह फिट नहीं बैठता? आप कहेंगे कि एक अच्छी जानकारी में, यह फिट बैठता है।

हाँ, जब हमने मैकेनिस्टिक मॉडल से ऑर्गेनिक मॉडल, बैक वैल्यू सेपरेशन और बैक वैल्यू यूनिटी की बात की, तो मैं सोच रहा था कि मैकेनिस्टिक मॉडल से ऑर्गेनिक मॉडल की ओर जाने में ऐसा क्या खास है जो सब्सटेंस से प्रोसेस और एक्सटर्नल से प्रोसेस की ओर जाने में पहले से ही मौजूद नहीं है... हाँ, मुझे पक्का नहीं है कि मैं उस तरह की चीज़ को मानूंगा। मुझे लगता है कि यही बेसिक चीज़ है। और फिर जब वह तीन गुना डिस्क्रिप्शन, तीन गुना इंग्रीडिएंट्स के बाद इवेंट्स के हिसाब से प्रोसेस को डिफाइन करता है, तो आप देखना शुरू करते हैं कि यह एक ऑर्गेनिक मॉडल है।

ये अंदरूनी रिश्ते हैं। यह सब्जेक्ट-ऑब्जेक्ट कंटिन्युअम है। तो ये सभी चीज़ें उनके प्रोसेस के डिस्क्रिप्शन में हैं।

हाँ, आप सही कह रहे हैं। ये अलग-अलग चीज़ें नहीं हैं। यह बस एक कॉन्सेप्ट को खोलना है।

दूसरे शब्दों में कहें तो यह एक बहुत ही सुंदर और एक जैसी स्कीम है। डेविड? मैं बस एक आइडिया पर काम कर रहा हूँ जो मुझे सैक्सन मॉडर्निज़्म पढ़ते समय आया था। क्या आप कोने में डेविड को सुन सकते हैं? बॉब? थोड़ा ज़ोर से बोलो, प्लीज़, डेविड।

मैं जो पढ़ रहा था, वह यह है। अपनी किताब के पेज 54 पर, वह बताते हैं कि अगर कवियों ने रिएक्टिव के बजाय मैकेनिस्टिक दुनिया को देखा होता, तो वे प्रकृति के बारे में कविता लिखने के बजाय इंसानी मन के बारे में कविता लिखते। अगर वे एक जैसे होते।

क्या ऐसा भी नहीं हुआ? मुझे लिटरेचर के बारे में ज़्यादा नहीं पता, लेकिन क्या उस समय में उन्होंने इंसानी दिमाग की महानता के बारे में बात नहीं की ? जैसे, आप अलेक्जेंडर पोप के इंसान पर लिखे एस्से के बारे में सोच रहे हैं। जहाँ उन्होंने कहा है कि इंसानियत की सही स्टडी इंसान है। हाँ, वे ऐसा करते हैं।

इंसानी समझ के बारे में लिखते और उसकी तारीफ़ करते हुए, वे अभी भी यह ऑब्जेक्टिविस्ट नज़रिया अपनाते हैं। तो इस मायने में, वे कंसिस्टेंट नहीं हैं। वे कंसिस्टेंट नहीं हैं।

ऑब्जेक्टिविस्ट नज़रिया अपनाते हुए, वे प्राइमरी क्वालिटीज़ को ऑब्जेक्टिव मानते हैं। उन्हें लगता है कि वे सेकेंडरी क्वालिटीज़ के बारे में काफी ऑब्जेक्टिव हैं, जो प्राइमरी क्वालिटीज़ का उनके अपने सेंसरी सिस्टम पर असर है। इनकंसिस्टेंटनेस तब होती है जब वे उन सेकेंडरी क्वालिटीज़ को बाहर की चीज़ों से जोड़ते हैं।

जैसे कि गुलाब सच में लाल है। जैसे कि गुलाब सच में खुशबूदार है। आप देखिए।

मैं देख सकता था कि उनमें से कुछ कह सकते हैं, अरे सुनो, बस बोलने के तरीके और शॉर्टकट हैं। जब तुम कहते हो कि सूरज उगता है, तो तुम्हारा मतलब यह नहीं होता कि सूरज चल रहा है, है ना? जब तुम कहते हो कि गुलाब लाल है, तो तुम्हारा मतलब यह नहीं होता कि गुलाब लाल है, है ना? तुम्हें पता है, सूरज उगता है; हमारे नज़रिए से सूरज उगता हुआ लगता है। हमारे नज़रिए से गुलाब लाल दिखता है।

तो वे इस तरह अपना बचाव कर सकते थे। ऐसे में मुझे लगता है कि व्हाइटहेड ने इस बारे में जो कहा है, वह आलोचना से ज़्यादा एक बयान है कि मशीनी आधार पर ऑब्जेक्टिव एस्थेटिक वैल्यूज़ का एस्थेटिक डेवलप करने की समस्या क्या है। और सच में, जब आप उस समय की एस्थेटिक थ्योरीज़ को देखते हैं, तो उदाहरण के लिए, ह्यूम एस्थेटिक को ज़्यादातर सब्जेक्टिव भावनाओं, जुनून, पसंद, इस तरह की चीज़ों के हिसाब से देखते हैं।

जो हमारे टेस्ट को अच्छा लगता है। आप देखिए। तो ऐसा नहीं है कि गुलाब में कोई एस्थेटिक वैल्यू होती है।

इसकी खूबसूरती इसकी यूज़र सैटिस्फैक्शन में है। यूज़र सैटिस्फैक्शन में मोरल वैल्यू की तरह, यूटिलिटेरियन दिशा भी है। आप देखिए।

क्या यह समझ में आता है? ठीक है। क्या आप चाहते हैं कि कोर्स के इस मोड़ पर किसी दोपहर या शाम को सबके लिए एक फ्री डिस्कशन हो? क्या यह मददगार होगा? हेगेल? व्हाइटहेड के ज़रिए पोस्ट-हेगेलियन चीज़ें, या हम ड्यूई के साथ खत्म होने तक इंतज़ार करें? आपकी क्या चॉइस है? फिर से आइएगा? ड्यूई के बाद करते हैं। ड्यूई के बाद? ठीक है।

ड्यूई के बाद, यह है। इसका मतलब है कि अगले हफ़्ते कभी। मैं कोई समय तय करने की कोशिश करूँगा।

वैसे भी अगला हफ़्ता मेरे लिए इस हफ़्ते से बेहतर होगा। यह हफ़्ता काफ़ी बिज़ी लग रहा है। ठीक है।

अब, चलिए अपना ध्यान अमेरिकन प्रैगमैटिज़्म की ओर मोड़ते हैं। और कुछ और कहने से पहले, मैं शुरू में यह कहना चाहता हूँ कि प्रैगमैटिज़्म और प्रोसेस फ़िलॉसफ़ी में समानताएँ हैं। असल में,

सालों पहले, फ़िलॉसफ़ी कॉन्फ़्रेंस के लिए, हमने प्रोसेस मेटाफ़िज़िक्स पर कॉन्फ़्रेंस की थी जिसमें व्हाइटहेड पर चर्चा हुई थी, और डेवी पर भी चर्चा हुई थी, क्योंकि डेवी का भी एक अलग तरह का प्रोसेस मेटाफ़िज़िक है।

और आप पाएंगे कि व्हाइटहेड में हम जिस टर्मिनोलॉजी से परिचित हो रहे हैं, वह ड्यूई में भी आती है। नहीं, घटनाओं का उनका टेक्निकल डिस्क्रिप्शन और उस तरह की चीज़ें नहीं, बल्कि कंक्रीट और एब्सट्रैक्ट शब्द। ड्यूई के पास भी किसी घटना की कुछ समझ है जो उनकी चीज़ के दिल में होती है।

वह इसे एक सिचुएशन, एक प्रॉब्लम सिचुएशन कहते हैं। ज़ोर ज़रूर प्रोसेस पर है। मॉडल ऑर्गेनिक है।

रिश्ते अंदरूनी हैं, बाहरी नहीं। किसी तरह के सब्जेक्ट-ऑब्जेक्ट कंटिन्युअम के लिए जानने में पूरी तरह से ऑब्जेक्टिविटी को नकारा जाता है। और फिर से फैक्ट-वैल्यू सेपरेशन के बजाय फैक्ट-वैल्यू यूनिटी खोजने की कोशिश की जाती है।

तो मैंने व्हाइटहेड के बारे में ये बातें बोर्ड पर इसलिए रखीं ताकि व्हाइटहेड पर कुछ चर्चा हो सके, लेकिन इनका दोहरा मकसद है। इनका दोहरा मकसद है। मैं क्वालिटेटिव और क्वांटिटेटिव का यह काम छोड़ दूंगा।

मुझे पक्का नहीं पता कि मैं ऐसा चाहता हूँ। लेकिन नहीं तो, मुझे लगता है कि यह ड्यूई के साथ-साथ व्हाइटहेड के भी काम आ सकता है। अब, इसे ध्यान में रखते हुए, अमेरिकी प्रैक्टिकल सोच की कुछ आम बातें।

सबसे पहले, कुछ आम बातें। और पहली बात, जैसा कि आप प्रैगमैटिक शब्द से समझ सकते हैं, यह थ्योरेटिकल के बजाय प्रैक्टिकल को अहमियत देता है। थ्योरेटिकल के बजाय प्रैक्टिकल को अहमियत।

या अगर आपको पसंद है, तो अमूर्त चीज़ों के बजाय ठोस अनुभव को प्राथमिकता। तो, जेनेल, यह बात आपको भी पसंद आनी चाहिए। अमूर्त चीज़ों के बजाय ठोस चीज़ों को प्राथमिकता।

और ड्यूई और जेम्स वगैरह के लिए, व्हाइटहेड की तरह, ब्रिटिश अनुभववादी एब्सट्रैक्शन के दोषी हैं। इसलिए, कंक्रीट की अपील, हेगेलियन अर्थ में, कंक्रीट की अपील है। जहाँ हेगेल का डायलेक्टिक एब्सट्रैक्ट से कंक्रीट की ओर जाता है।

ठोस चीज़ ठोस अनुभव है। अनुभव वैसा ही है जैसा जिया जाता है। न कि अनुभव जैसा कि लॉक और बर्कले जैसे लोगों ने इसे थ्योरी दी है।

उनकी थ्योरी आसान आइडिया वगैरह की है। तो, प्रैक्टिकल, ठोस चीज़ों को सबसे ज़्यादा अहमियत दी जाती है। उनकी चिंता सोचने और करने के बीच के रिश्ते को लेकर है।

या, जैसा कि मार्क्सवाद जैसी कुछ परंपराओं में भाषा है, थ्योरी का प्रैक्सिस से रिश्ता। उनकी चिंता अनुभव को पूरी तरह से सिर्फ कॉग्निटिव ही नहीं, बल्कि अफेक्टिव अनुभव के तौर पर देखना है। और इत्तेफ़ाक से, आपको यह व्हाइटहेड में भी मिल सकता है।

सिर्फ कॉन्सेप्टुअल समझ ही नहीं, बल्कि फिजिकल समझ भी। कॉग्निटिव और अफेक्टिव। इसलिए आप पाएंगे कि प्रैग्मैटिस्ट लोग इंटेलेक्चुअलिज़्म पर एतराज़ करते हैं।

जेम्स इस कहावत का इस्तेमाल सिर्फ थ्योरी के लिए लॉजिकल थ्योरी चाहने के लिए करते हैं। या स्पेक्टेटर एम्पिरिसिज़्म, जो ड्यूई का लॉक के लिए दिया गया नाम है। स्पेक्टेटर एम्पिरिसिज़्म।

आप जानते हैं कि कुछ लोग दर्शकों वाले खेलों को क्या-क्या गालियां देते हैं। जैसे, मान लीजिए, फुटबॉल। जहां कुछ लोग, जैसा कि वे कहते हैं, बहुत ज़्यादा एक्सरसाइज़ करते हैं।

और कई हज़ार लोगों को बहुत कम मिल रहा है। देखने वाले खेल। ड्यूई का कहना है कि जॉन लॉक ने अनुभव को देखने वाले खेल तक सीमित कर दिया है।

एक्टिव इन्वॉल्वमेंट के बजाय. अनुभव के बारे में गलतफ़हमी. अनुभव एक्टिव होता है, पैसिव नहीं.

या डेसकार्टेस की परंपरा में निश्चितता की खोज। जॉन लॉक की परंपरा, जहाँ तक हम कर सकते हैं। ड्यूई की इसी नाम की एक किताब है, द क्रेस्ट फॉर सर्टेनिटी, जिसमें उन्होंने निश्चितता की खोज की बुराई की है।

प्रैक्टिकल मकसद के लिए, किसे निश्चितता की ज़रूरत है? निश्चितता की तलाश एक गलत खोज है। आपको बस प्रैक्टिकल निश्चितता चाहिए। प्रैक्टिकल कॉन्फिडेंस।

इस पर काम करने के लिए काफी है। अब, प्रैक्टिकल, ठोस अनुभव की इस सारी अपील के पीछे एक बुनियादी बात है कि अनुभव ही असलियत है। अनुभव ही असलियत है।

और अगर आप अभी भी एक्सपीरियंस को लॉक के आसान आइडियाज़ से बना हुआ मान रहे हैं, जो असलियत को सिर्फ दिखाते हैं, तो दो बातें। एक, शायद प्रैक्टिकल लोग कहेंगे, इंसानी एक्सपीरियंस ही हमारी असलियत है। जो शायद नॉलेज का सोशियोलॉजिस्ट कहेगा।

प्रैग्मैटिज़्म में एक अनोखी बात देखने लगते हैं।

प्रैग्मैटिज़्म में एक अद्भुतता। मेरे एक ग्रेजुएट प्रोफेसर थे जिन्होंने एक दिन क्लास में कई लोगों को हैरान करते हुए कहा कि उनके हिसाब से, प्रैग्मैटिज़्म और पॉज़िटिविज़्म एक ही चीज़ हैं। उनमें कोई फ़र्क नहीं है।

वे दोनों एक जैसे बुरे हैं। यह उनका एक दूसरे विकल्प पर एक कोर्स से परिचय था। आप देखिए, उन दिनों में जब प्रैग्मैटिज़्म और पॉज़िटिविज़्म बड़ी चीज़ें थीं।

लेकिन इंसानी अनुभव ही हमारी सच्चाई है। मेरा दूसरा कमेंट यह है कि यह हेगेलियन परंपरा है। क्योंकि हेगेल जो करने की कोशिश कर रहे थे, आप देखिए, वह सेल्फ-कॉन्शसनेस के लेंस से देखना था।

इंसानी अनुभव का। और किसी भी चीज़ के इंसानी अनुभव में सामने आ रही बातचीत को खोजना। उसे पूरी सच्चाई पर प्रोजेक्ट करना।

तो यह हेगेलियन परंपरा से बहुत मिलता-जुलता है। ड्यूई में, आपको यह खास तौर पर मिलेगा। ड्यूई अपने शुरुआती सालों में, अमेरिकन नियो-हेगेलियन परंपरा का हिस्सा थे।

उनके पहले पब्लिकेशन 'द मोनिस्ट' नाम के जर्नल में आर्टिकल थे। दिलचस्प टाइटल। 'द मोनिस्ट'।

जो उन दिनों हेगेलियन्स का जर्नल था। हेगेल, एब्सोल्यूट मोनिस्ट। खैर, द मोनिस्ट लंबे समय तक सर्कुलेशन से बाहर हो गया।

जब यह वापस आया, तो यह सिर्फ़ मेटाफ़िज़िकल टॉपिक में दिलचस्पी रखने वाला एक जर्नल था। लेकिन ड्यूई के ज़माने में, यह हेगेलियन जर्नल था। तो, असल में, ड्यूई में जो है वह एक और हेगेलियन है जो हेगेल को नेचुरलिस्टिक बेसिस पर कन्वर्ट कर रहा है।

अब, व्हाइटहेड हेगेल के शिष्य ब्रैडली को नेचुरलिस्टिक बेसिस पर कन्वर्ट कर रहे थे। ड्यूई बूढ़े आदमी को नेचुरलिस्टिक बेसिस पर कन्वर्ट कर रहे थे। या शायद वह अमेरिकी शिष्य जोशिया रॉयस को कन्वर्ट कर रहे थे।

लेकिन यह फिर से वही हेगेलियन परंपरा है। ठीक है, तो यह पहली खासियत है। थ्योरेटिकल के बजाय प्रैक्टिकल को प्राथमिकता।

ठोस अनुभव की प्राथमिकता। दूसरी खासियत है ऑर्गेनिक रिश्तों पर ज़ोर। ऑर्गेनिक रिश्ते।

और फिर, यह व्हाइटहेडियन घंटी बजानी चाहिए। ऑर्गेनिक रिश्ता। हाँ, आपस में जुड़ा होना।

तो, अलग-अलग लेवल पर, प्रैग्मैटिस्ट सभी जॉन लॉक के आसान आइडिया से दिखाए गए अनुभव के एटमिस्टिक नज़रिए की बुराई करते हैं। ऐसे आइडिया जिनका किसी और चीज़ से कोई अंदरूनी रिश्ता नहीं होता। ये रिश्ते पूरी तरह से बाहरी होते हैं।

इस मायने में कि एसोसिएशन के नियम उन पर रिश्ते थोपते हैं। खैर, इस तरह की चीज़ें टैबू हैं। जेम्स चेतना की धारा की बात करते हैं।

चेतना की एक धारा, एक आपस में जुड़ी हुई चीज़। चेतना की पूरी धारा के अंदर ऑर्गेनिक रिश्ते। और ड्यूई मौजूदा अनुभव को आगे देखने वाला, भविष्य के अनुभव का ज़िक्र करने वाला बताते हैं।

और आप यह उनके आइडिया के बारे में सोच में देख सकते हैं। क्योंकि ड्यूई के लिए, एक आइडिया यह आइडिया है कि हम भविष्य में क्या करेंगे। आपको अपने आइडिया कहाँ से मिलते हैं? पिछले अनुभव से।

यानी, भविष्य में। आपको लगता है कि वे सभी आपस में जुड़े हुए हैं। तो यह ऑर्गेनिक आपसी संबंध, फिर, बुनियादी बात है।

और इसी वजह से वे मन और शरीर के किसी भी दोहरेपन को मना करते हैं। शारीरिक और मानसिक का आपस में संबंध है। वे तथ्य और मूल्य के किसी भी दोहरेपन को मना करते हैं।

तथ्य और मूल्य का अलगाव। मूल्य अनुभव के संदर्भ में और भविष्य के अनुभव के संबंध में उभरते हैं। इसलिए चीजों का आपस में जुड़ा होना।

और फिर तीसरी खासियत, फिलॉसॉफिकल नेचुरलिज़्म। फिलॉसॉफिकल नेचुरलिज़्म। नेचुरलिज़्म का इस्तेमाल होता है, नेचुरलिज़्म शब्द का इस्तेमाल दो मतलब में किया जाता है।

एक, मेथोडोलॉजिकल नेचुरलिज़्म। और दूसरा, मेटाफिजिकल। मेथोडोलॉजिकल नेचुरलिज़्म, बेशक, नेचुरल साइंस की मेथोडोलॉजी को बताता है।

तो मेथोडोलॉजिकल नेचुरलिस्ट साइंटिफिक मेथड के इस्तेमाल को यूनिवर्सल बनाता है। साइंटिफिक मेथड हर तरह की जांच पर लागू होता है। और आप पाएंगे कि यह ड्यूई की किताब, द रिकंस्ट्रक्शन ऑफ फिलॉसफी में मुख्य थीम में से एक है।

वह जो रिकंस्ट्रक्शन चाहते हैं, वह साइंटिफिक मेथड के यूनिवर्सल एप्लीकेशन के ज़रिए रिकंस्ट्रक्शन है। अगर आपको एक्सपेरिमेंटल सोच पसंद है। उनकी एक किताब है जिसका नाम है एसेज़ इन एक्सपेरिमेंटल लॉजिक।

यूनिवर्सलाइज़ेशन। और मुझे लगता है कि यह कहना सही होगा कि विलियम जेम्स के मामले में भी ऐसा ही है। हम जेम्स के मामले में इसे देखेंगे।

सच के बारे में उनका मशहूर प्रैक्टिकल नज़रिया असल में यह नज़रिया है कि आप किसी हाइपोथीसिस की एक्सपेरिमेंटल पुष्टि चाहते हैं। किसी विश्वास की सच्चाई को टेस्ट करने का यही तरीका है। और चार्ल्स सैंडर्स पियर्स, हम देखेंगे, कहते हैं कि साइंटिफिक मेथड ही अस्थिर विचारों के उतार-चढ़ाव के बीच किसी विश्वास को ठीक करने का तरीका है।

साइंटिफिक मेथड। तो मेथडोलॉजिकल नेचुरलिज़्म, साफ़ तौर पर। मेटाफिजिकल नेचुरलिज़्म, इन सभी में मेथडोलॉजिकल नेचुरलिज़्म।

मुझे लगता है कि मेटाफिजिकल नेचुरलिज्म, ड्यूई में बहुत साफ तौर पर है। जेम्स में नहीं। जेम्स एक तरह के आस्तिक हैं।

ओह, ऐसा लगता है कि जेम्स के पास एक सीमित ईश्वर है। ईश्वर की शक्ति सीमित है। लेकिन वह एक तरह का आस्तिक है।

लेकिन ड्यूई साफ़ तौर पर एक मेटाफिजिकल नेचुरलिस्ट हैं। जो कुछ भी है वह सब नेचुरल प्रोसेस हैं। नेचुरल प्रोसेस जिन्हें एवोल्यूशनरी तरीके से समझाया जा सकता है।

और इसलिए आप पाएंगे कि रिकंस्ट्रक्शन इन फिलॉसफी में, वह न केवल साइंटिफिक मेथड के इस्तेमाल को यूनिवर्सल बनाना चाहते हैं, बल्कि वह इवोल्यूशनरी एक्सप्लेनेशन को भी यूनिवर्सल बनाना चाहते हैं। और फिलॉसफी के इतिहास को खुद एक इवोल्यूशनरी प्रोसेस मानते हैं। नेचुरल सिलेक्शन की थ्योरी।

इससे कोई भी फिक्स्ड फॉर्म, स्पीशीज़ का फिक्स होना, और ऐसी चीज़ें खत्म हो जाती हैं। वगैरह। तो ये तीन खासियतें, प्रैक्टिकल चीज़ों की अहमियत, हर चीज़ का ऑर्गेनिक आपस में जुड़ा होना, और मेथड वाला नेचुरलिज्म, ड्यूई के मामले में मेटाफिजिकल हैं।

काफ़ी साफ़ है? टर्मिनेशन काफ़ी जानी-पहचानी है ? तो मुझे लगता है कि यह कम से कम सोचने लायक तो है। ठीक है, मैं कुछ बातें कहता हूँ, फिर चार्ल्स सैंडर्स पीयर्स के बारे में थोड़ा। अगर आपके लिए प्रैग्मैटिज़्म का मतलब है, अगर इस शब्द का मतलब आपके लिए रिलेटिविज़्म है, सच की एक रिलेटिविस्टिक थ्योरी, तो पीयर्स प्रैग्मैटिस्ट नहीं हैं।

असल में, मैंने जिन दो लोगों की लिस्ट दी है, उनसे खुद को अलग करने के लिए, पीयर्स खुद को प्रैग्मैटिस्ट कहना पसंद करते थे। एक प्रैग्मैटिस्ट। बात यह है कि पीयर्स सच की ऑब्जेक्टिविटी में विश्वास करते थे।

सही और गलत की निष्पक्षता। असल में, वह एक प्रैक्टिसिंग साइंटिस्ट थे। उन्होंने यूनाइटेड स्टेट्स कोस्टल सर्वे के साथ काम किया।

और बस साइंटिफिक मेथड को जानने के एक तरीके के तौर पर बेच दिया गया था। लेकिन यह पीयर्स का काम है, और उन्होंने इसे पीयर्स का काम नहीं बल्कि पीयर्स कहा, यही वह है, जिसने जेम्स और ड्यूई की नींव रखी। और इसलिए अमेरिकी प्रैग्मैटिज़्म का इतिहास हमेशा पीयर्स से शुरू होकर बताया जाता है।

हमारे नज़रिए से एक दिलचस्प बात यह है कि उनके दो सबसे असरदार आर्टिकल पॉपुलर साइंस मंथली में छपे, जो आजकल फिलॉसफी की पढ़ाई के लिए जाने वाली जगह नहीं है। लेकिन 1877 में, उन्होंने 'द फिक्सेशन ऑफ़ बिलीफ' नाम का एक आर्टिकल छपा। और 1878 में, 'हाउ टू मेक आवर आइडियाज क्लियर' नाम का एक और आर्टिकल छपा।

अब, साफ़ है, इनमें से पहला सवाल सच पक्का करने के सवाल से जुड़ा है। दूसरा मतलब के सवाल से जुड़ा है। हम किसी चीज़ का मतलब कैसे समझें, और हम अपने आइडिया कैसे साफ़ करें? और सच में, दोनों मामलों में जवाब एक ही है।

प्राैक्टिकल नतीजों को देखें। प्राैक्टिकल नतीजों को देखें। अगर आप जानना चाहते हैं कि आपकी कोई सोच, कोई आइडिया, कोई थ्योरी, अगर आप जानना चाहते हैं कि उसका क्या मतलब है, तो पूछें कि असल में उसका क्या मतलब है।

अगर इसे लागू किया जाए तो इसका क्या मतलब होगा? और 'द फिक्सेशन ऑफ़ बिलीफ़' में, यही बात किसी मामले की सच्चाई का पता लगाने के लिए भी लागू होती है। अगर आप चाहते हैं कि कोई विश्वास पूरे भरोसे के साथ पक्का हो जाए, तो इसके कई तरीके हो सकते हैं। वह तीन तरीकों को मना करते हैं और चौथे तरीके को सपोर्ट करते हैं।

पहला है ज़िद का तरीका, जो असल में कहता है, मैं अपना मन नहीं बदलूंगा, चाहे आप कुछ भी कहें। मुझे सच मत बताओ, मैंने अपना मन बना लिया है। ज़िद का तरीका।

और ज़ाहिर है, उनका कहना यह है कि सच का पता लगाने का कोई तरीका नहीं है। यह आपके मन में किसी विश्वास को पक्का करने का एक तरीका हो सकता है, लेकिन सच को पक्का करने का तरीका नहीं है। दूसरा तरीका है अथॉरिटी का।

वहां समस्या यह है कि अलग-अलग अथॉरिटीज़ हैं। तो आप अलग-अलग अथॉरिटीज़ के बीच कैसे जज करेंगे? और वे क्या कहते हैं। तीसरा है परंपरा का तरीका।

किसकी परंपरा? किसका कन्वेंशन? और बेशक, यह अथॉरिटी के तरीके जैसा ही है। तो वह साइंटिफिक तरीके की वकालत करते हैं। साइंटिफिक तरीका।

यह कोई पहले से बनी परंपरा नहीं है जो किसी भी ऑब्ज़र्वेशन से पहले किसी बात को कन्फर्म करती है। बल्कि यह किसी हाइपोथीसिस को कन्फर्म करने का तरीका है। जहाँ ऑब्ज़र्वर कम्युनिटी, यानी साइंटिफिक कम्युनिटी के अंदर पब्लिक सबूतों की अपील होती है।

एक ऐसा प्रोसेस जो खुद को ठीक करता है। मुझे कहना चाहिए था कि परंपरा का तरीका एक अपील है जिसे अलग-अलग परंपराएं सहज समझती हैं। उनका कहना है कि सहज ज्ञान हर परंपरा में अलग-अलग होता है।

तो वह इसी बात की वकालत कर रहे हैं। अब, रैशनल प्रूफ के लिए पुरानी चिंताएँ क्यों नहीं? पहले प्रिंसिपल्स खोजने और फिर उससे नतीजा निकालने का फाउंडेशनलिस्ट तरीका क्यों नहीं? और यह असल में मामले की जड़ तक पहुँचता है। क्योंकि पियर्स जो कर रहे हैं, वह असल में कार्टेशियन ट्रेडिशन की आलोचना कर रहे हैं।

और ये रहा मेरे पास एक प्रिंट-ऑफ़ जो आपसे पहले ले आएगा। ओह, आपके पास एक है। ठीक है, सबके पास एक है? ठीक है, अगर आप चाहें तो मुझे बाद में कोई एक्स्ट्रा दे सकते हैं।

आपने देखा होगा कि यह उनके जमा किए गए पेपर्स से लिया गया है, जिसे हर कोई पियर्स तक पहुंचने के लिए इस्तेमाल करता है। इसमें से ज्यादातर निबंध थे। उनकी ज्यादातर लिखाई निबंध ही थी।

ध्यान दें कि उन्होंने शुरू में कहा कि मॉडर्न फिलॉसफी के पिता, डेसकार्टेस, इसे स्कॉलैस्टिसिज़्म से इस तरह अलग करते हैं। यह सिखाता है कि फिलॉसफी की शुरुआत यूनिवर्सल डाउट से होनी चाहिए, जबकि स्कॉलैस्टिसिज़्म ने कभी भी फंडामेंटल्स पर सवाल नहीं उठाया। निश्चितता का आखिरी टेस्ट इंडिविजुअल कॉन्शसनेस में पाया जाता है।

स्टोव से गर्म कमरा अकेला। सच की सहज जांच हमेशा निजी होती है। स्कॉलैस्टिसिज़्म संतों और कैथोलिक चर्च की गवाही पर टिका था।

तीसरा, मिडिल एज के मल्टीफॉर्म आर्गुमेंट में किसी खास बात के लिए कई वजहें और तर्क शामिल थे। एक्विनास याद हैं? वह किसी चीज़ के लिए कितने तर्क देंगे? मिडिल एज के मल्टीफॉर्म आर्गुमेंटेशन की जगह सिर्फ एक ही नतीजे ने ले ली है, जो अक्सर अनजान बातों पर निर्भर करता है। डेसकार्टेस के मेडिटेशन के बारे में सोचें और कैसे एक चीज़ आखिर तक दूसरी चीज़ के पीछे चलती है।

चौथी बात, स्कॉलैस्टिसिज़्म में विश्वास के अपने रहस्य थे, लेकिन इसने सभी बनी हुई चीज़ों को समझाने का काम किया। जबकि कई ऐसे तथ्य हैं जिन्हें कार्टेशियनिज़्म न केवल समझाता नहीं है, बल्कि उन्हें पूरी तरह से समझ से बाहर कर देता है, सिवाय यह कहने के कि भगवान ने इसे ऐसा बनाया है। अब, इनमें से कुछ या सभी मामलों में, ज्यादातर मॉडर्न फिलॉसफर कार्टेशियन रहे हैं।

और मुझे लगता है कि आप देख सकते हैं कि यह बात कम से कम कांट तक तो सच है। और उनका जवाब भी यही है। पहले पॉइंट पर, हम पूरे शक के साथ शुरू नहीं कर सकते।

क्यों नहीं? खैर, हम हमेशा कुछ ऐसा मिस कर देते हैं जिस पर हमने शक करने के बारे में नहीं सोचा होता क्योंकि हमें अपनी सोच के बारे में पता नहीं होता, हमेशा अपनी मान्यताओं के बारे में पता नहीं होता। हाँ, मान्यताएँ हो सकता है आपको अपनी मान्यताओं के बारे में पता न हो।

कहने का मतलब है, आप कहते हैं, ओह, हाँ, मुझे लगता है कि मुझे यकीन है कि जब कोई आपको यह बताता है क्योंकि आप इसे हल्के में ले रहे हैं। इसलिए हम पूरे शक के साथ शुरुआत नहीं कर सकते। प्रैक्टिकल तौर पर, यह मुमकिन नहीं है।

दूसरा, यही फॉर्मलिज़्म कार्टेशियन क्राइटेरिया में भी दिखता है, जिसका मतलब यह है: जिस चीज़ पर मुझे साफ़ तौर पर यकीन है, वह सच है। खैर, ज़ाहिर है, यह खोज बेकार हो जाती है क्योंकि अगर हर कोई यकीन कर ले, तो कोई और सवाल ही नहीं उठता। और यकीन होने और किसी चीज़ के सच होने में बहुत फ़र्क होता है।

मेरा एक दोस्त था जो जब कोई उससे कहता था, तो कहता था, ठीक है, यह तो बिल्कुल साफ़ है। मेरा दोस्त कहता था, ठीक है, हो सकता है यह तुम्हारे लिए हो, मेरे लिए नहीं। तुम्हें पता है, और मतलब यह है कि अगर यह मेरे और बाकी सबके लिए भी हो, तो क्या? उसका कहना है कि साफ़-सफ़ाई और साफ़-साफ़ होना ही सच होने के क्राइटेरिया हैं, सच नहीं।

यह कहना कि यह साफ़ और अलग है, इसका मतलब है, ओह, मैं समझ गया कि आपका क्या मतलब है, न कि यह ज़रूरी नहीं कि यह सच हो। हालांकि कभी-कभी सच मतलब पर निर्भर करता है। नंबर तीन, फ़िलॉसफ़ी को अपने तरीकों में सफल साइंस की नकल करनी चाहिए और किसी एक के नतीजे पर भरोसा करने के बजाय उन तर्कों की भीड़ और अलग-अलग तरह पर भरोसा करना चाहिए।

यह ऐसा है जैसे यह कहना कि डेसकार्टेस ने मैथमेटिकल मेथड पर बहुत ज़्यादा भरोसा किया, जो बेशक, उनके समय में कॉन्टिनेंटल साइंस में कॉन्टिनेंटल साइंस का मेथड था, जिसमें ज़्यादातर ऑप्टिक्स और मैकेनिक्स थे। लेकिन बाद के एक्सपेरिमेंटल साइंस में, मैथमेटिक्स मेथड नहीं है। यह सिर्फ़ एक है।

एक्सपेरिमेंटल तरीका कहीं ज़्यादा ज़रूरी है। और फिर नंबर चार, हर अनआइडियलिस्टिक फ़िलॉसफ़ी किसी ऐसे अल्टीमेट को मानती है जिसे समझा न जा सके, जिसका एनालिसिस न किया जा सके। शॉर्ट में, कुछ ऐसा जो खुद मीडिएशन से निकले, मीडिएशन के लिए सेंसिटिव न हो।

अब जब कोई भी चीज़ ऐसी है जिसे समझाया नहीं जा सकता, तो उसे सिर्फ़ साइंस से तर्क करके ही जाना जा सकता है। खैर, साइंस से किसी नतीजे का एकमात्र सही कारण यह है कि नतीजा सच को समझाए। समझाने के लिए, यह मान लेना कि सच को समझाया नहीं जा सकता, उसे समझाना नहीं है।

और इसलिए इस अंदाज़े को कभी मंजूरी नहीं दी जाती। और वह कार्टेशियनिज़्म के विरोध में लिखी गई कुछ बातों को दोहराते हैं, यह कहते हुए कि हमारे पास खुद को समझने की कोई ताकत नहीं है। हमारे पास इंट्यूशन की कोई ताकत नहीं है।

हमारे पास बिना संकेतों के सोचने की ताकत नहीं है। और इसलिए हमें इस बात का कोई अंदाज़ा नहीं है कि क्या पूरी तरह से पहचाना नहीं जा सकता। कहने का मतलब है, अगर आप बिना संकेतों के नहीं सोच सकते और आपके पास उन चीज़ों के लिए कोई संकेत नहीं हैं जो सोची नहीं जा सकतीं, तो आप उन चीज़ों के बारे में नहीं सोच सकते जिनके बारे में सोचा नहीं जा सकता।

मुझे शक है कि आखिरी लाइन उसी समय के एक ब्रिटिश फ़िलॉसफ़र का ज़िक्र करती है। हर्बर्ट स्पेंसर, जो जिस बारे में लिखना चाहते थे, उसे जानने लायक और न जानने लायक में बांट देते थे। और उनके समय के लोगों के बीच यह कहना काफी मज़ाक बन गया कि स्पेंसर को न जानने लायक के बारे में कितना पता था।

अगर आप इसके बारे में बात नहीं कर सकते, वगैरह। लेकिन मैं यह मानता हूँ कि बहुत सी चीज़ों के बारे में यह कहने के अलावा, कुछ ऐसा जो मुझे नहीं पता, ऐसी कोई भी अनजानी चीज़ जिसके बारे में हम बात नहीं कर सकते। और बाद में, विट्गोस्टाइन हमें बताएंगे कि जिसके बारे में हम बात नहीं कर सकते, उसके बारे में हमें चुप रहना चाहिए।

क्या कहें, एक और मेथडोलॉजिकल क्रांति के निशान हैं।

आप देखिए, डेसकार्टेस स्कॉलैस्टिक मेथड से फिलॉसफी में एक मेथडोलॉजिकल क्रांति दिखाते हैं। बेकन का इंडक्टिव मेथड का मेथडोलॉजिकल क्रांति। कांट, ट्रान्सेंडेंटल मेथड का मेथडोलॉजिकल क्रांति।

संभावना की सब्जेक्टिव प्रीकंडीशन को समझने की कोशिश। और अब, एक्सपेरिमेंटल तरीकों में एक और मेथडोलॉजिकल क्रांति। साइंटिफिक तरीका, यूनिवर्सलाइज़्ड।

खैर, जैसा कि मैंने कहा, पियर्स एक रियलिस्ट थे। उनका मानना था कि प्रकृति के यूनिवर्सल नियम हैं। ऑब्जेक्ट्स हैं, जिन्हें उन्होंने कहा वास्तविक।

REEL नहीं, बल्कि REAL. वह सिर्फ़ मछली नहीं पकड़ रहा था, भले ही वह कोस्टल सर्वे में था. ऑब्जेक्टिव सच्चाईयाँ जिन्हें जाना जा सकता है.

अब, यह मेथडोलॉजिकल नेचुरलिज़्म है, तो, मेथडोलॉजिकल नेचुरलिज़्म। नेचुरल साइंस की मेथडोलॉजी यूनिवर्सलाइज़्ड है। यह मेथडोलॉजिकल नेचुरलिज़्म है जिसे प्रैगमैटिस्ट्स ने अपनाया है।

जेम्स और ड्यूई बहुत अच्छे हैं। जेम्स प्रैगमैटिज़्म को फिलॉसॉफिकल झगड़ों को सुलझाने का एक तरीका कहते हैं। जो कुछ-कुछ विश्वासों को पक्का करने जैसा लगता है।

किसी विश्वास को कैसे ठीक करें, झगड़े कैसे सुलझाएं। फिलॉसॉफिकल झगड़ों को सुलझाने का एक तरीका। किसी विश्वास के नतीजों का अंदाज़ा लगाकर।

और यह देखना कि क्या वे नतीजे सच में होते हैं। हाइपोथीसिस के एक्सपेरिमेंटल वेरिफिकेशन के साथ भी यही पैटर्न होता है। हालांकि, यह देखना ज़रूरी है कि जेम्स में, यह सिर्फ़ उस तरह से विश्वासों को ठीक करने की बात नहीं है।

आपको अनुभव के कॉन्सेप्ट पर ध्यान देना होगा। यही बदलता है। और यहाँ आप फ़र्क देखते हैं, डेसकार्टेस से नहीं, जो पियर्स के विरोधी थे, बल्कि लॉक से, जिन्होंने अनुभव को आसान आइडिया में एनालिसिस किया।

पैसिवली मिला हुआ। सिर्फ़ जुड़ाव की साइकोलॉजिकल प्रोसेस के हिसाब से जुड़ा हुआ या अलग हुआ। अनुभव का एटमाइज़ होना।

अब, एटॉमिक एक्सपीरियंस के बजाय, जेम्स एक ज़्यादा होलिस्टिक, आपस में जुड़ा हुआ, अगर आप चाहें तो, और ऑर्गेनिक एक्सपीरियंस चाहते हैं। उस मतलब में एक्सपीरियंस। जो इस मायने में कहीं ज़्यादा एक्सपीरियंस है कि हम इसे असल में एक्सपीरियंस करते हैं।

क्या आपको याद है कि आपने यह समझने की कोशिश की थी कि एटॉमिस्टिक सेंस डेटम क्या होता है? देखिए, एटॉमिस्टिक सेंस डेटम रंग का कोई पैच नहीं होता। यह एक पैच होता है। रंग एक अलग एटॉमिस्टिक सेंस डेटम होता है जिसे आप पैच पर लगाते हैं।

आप देखिए, एटॉमिस्टिक सेंस डेटा का पूरा आइडिया, उस मतलब में एक अनुभव, एक हाई लेवल का एब्सट्रैक्शन है। आप समझे? ठोस अनुभव प्राइमरी और सेकेंडरी क्वालिटी को अलग नहीं करता, आसान आइडिया में एटमाइज़ नहीं होता। ठोस अनुभव एक कंटिन्युअम, एक स्ट्रीम, एक प्रोसेस है।

और इसलिए वह इसी ठोस अनुभव के पीछे है। लेकिन जेम्स के लिए, ठोस अनुभव हमेशा साइकोलॉजिकल अनुभव होता है। सवाल यह नहीं है कि आप क्या सोच रहे हैं, बल्कि यह है कि आप इसे कैसा महसूस कर रहे हैं।

आप क्या सोच रहे हैं, यह नहीं, बल्कि आप कैसा महसूस कर रहे हैं। और ध्यान दें कि हमारे बात करने के आम तरीकों में ये कितने अलग हैं। आप देखिए, ज़्यादातर, क्लास में, मैं आपसे पूछता हूँ, अच्छा, आप क्या सोचते हैं? आपके दिमाग में क्या है? जैसे कि आप जो अनुभव कर रहे हैं वह सोचने वाले आइडिया, सोचने वाली थ्योरी का है।

लेकिन जेम्स अनुभव की बात उस मतलब में नहीं कर रहे हैं, जो ऑब्जेक्टिवाइज़िंग मतलब है। वह अनुभव की बात कर रहे हैं, न कि इस बारे में कि आप इसके बारे में कैसा महसूस करते हैं? आप देखते हैं? आप इसके बारे में कैसा महसूस करते हैं? क्या आपको कुछ ध्यान न देना महसूस होता है? अपने अनुभव में, क्या आप ध्यान न देने वाला महसूस करते हैं? या आप संतुष्ट महसूस करते हैं? अब, समझे? ध्यान न देना, संतुष्ट। थीसिस, एंटीथीसिस, सिंथेसिस।

सैटिस्फैक्शन, व्हाइटहेड के शब्दों में से एक है। क्या आप ध्यान न देने वाला महसूस करते हैं? क्या आप सैटिस्फाइड महसूस करते हैं? आप समझे? साइकोलॉजिकल अनुभव। असल बात यह है, जैसा कि आपने शायद पढ़ा होगा, अगर आप इस हफ़्ते स्टम्पफ पर पढ़ रहे हैं, कि जेम्स की शुरुआती पढ़ाई मेडिसिन में हुई थी।

फिजियोलॉजी पर ज़ोर। 19वीं सदी के आखिर में, जर्मनी में पहली एक्सपेरिमेंटल साइक लैब में कुछ समय तक पढ़ाई करके वह साइकोलॉजी में आए। फिजियोलॉजिकल साइकोलॉजी एक्सपेरिमेंटली।

साइंटिफिक मेथड का बैकग्राउंड पता है? अब, यह तब की बात है जब साइकोलॉजी को एक अलग साइंस नहीं माना जाता था। मुझे लगता है कि यह 19 तक था, क्या यह 1910, 1911 था, जर्नल ऑफ़ फिलॉसफी को जर्नल ऑफ़ फिलॉसफी, साइकोलॉजी, साइंटिफिक मेथड, वगैरह कहा जाता था। बहुत कुछ।

जर्नल ऑफ़ फिलॉसफी, साइकोलॉजी, साइंटिफिक मेथड, वगैरह। तो जब जेम्स इस देश में वापस आए और हार्वर्ड में साइकोलॉजी पढ़ाने की नौकरी मिली, तो वे फिलॉसफी डिपार्टमेंट में थे। उन्होंने अपनी ज़िंदगी में कभी फिलॉसफी का कोर्स नहीं किया।

और धीरे-धीरे फिजियोलॉजिकल साइकोलॉजी के बारे में लिखने से इंट्रोस्पेक्टिव साइकोलॉजी के बारे में लिखने, फिर फिलॉसॉफिकल साइकोलॉजी के बारे में लिखने और फिर फिलॉसफी के बारे में लिखने की ओर बढ़ गए। ओह, उन दिनों, ऐसा करना अब की तुलना में कहीं ज़्यादा मुमकिन था। वर्ल्ड वॉर II के बाद ही फिलॉसफी सच में बहुत ज़्यादा टेक्निकल, बहुत ज़्यादा स्पेशलाइज़्ड होने लगी थी।

लेकिन खासकर उस समय, यह एक तरह की इंटेलेक्चुअल इंक़ायरी थी जिसे कोई भी पढ़ा-लिखा इंसान पढ़ सकता था। इसीलिए पियर्स पॉपुलर साइंस मंथली में पब्लिश कर सका और असर डाल सका। आप अब ऐसा करके देखिए।

तो इसके साथ, आप देखते हैं कि जेम्स, उदाहरण के लिए, धार्मिक अनुभव की किस्मों, धर्म के मनोविज्ञान पर एक किताब लिख रहे हैं। अब, यह सच है कि दार्शनिक अभी भी धार्मिक अनुभव में रुचि रखते हैं। और धार्मिक अनुभव के लिए तर्क।

आप में से कुछ लोगों को पिछले साल का यैंडेल का लेक्चर याद होगा। उन्हें धार्मिक बहुलवाद में दिलचस्पी है। सिर्फ़ धर्मशास्त्रियों में नहीं, जैसा कि इस हफ़्ते है।

लेकिन फिलॉसफर भी धार्मिक प्लूरलिज़्म में दिलचस्पी रखते हैं। यैंडेल ने पिछले साल इस पर एक लेक्चर दिया था। इसलिए वह अपनी साइकोलॉजिकल कंडीशन, साइकोलॉजिकल तैयारी के आधार पर, या उसके असर में, ठोस अनुभव में दिलचस्पी रखते हैं।

तो सवाल यह है कि विश्वास को पक्का करने के मामले में, एक फिलॉसॉफिकल थ्योरी का मतलब समझने के मामले में, इसका साइकोलॉजिकली क्या मतलब है? तो वह मैटेरियलिज़्म को डिफाइन करते हैं। अब मैटेरियलिज़्म की उनकी डेफिनिशन यह है। प्रैक्टिकल डेफिनिशन।

मैटेरियलिज़्म का मतलब है इस बात से इनकार करना कि नैतिक व्यवस्था हमेशा रहने वाली है और आखिरी उम्मीदों को खत्म कर देना। मैटेरियलिज़्म के उलट, जिसे वह स्पिरिचुअलिज़्म कहते हैं, जिसे उनकी शब्दावली में मोटे तौर पर आस्तिकता के बराबर माना जाता है, उसका मतलब है हमेशा रहने वाली नैतिक व्यवस्था को मानना और उम्मीद छोड़ देना। तो, आस्तिकता, अलग-अलग नज़रियों के मुकाबले मैटेरियलिज़्म को डिफाइन करने का रेफरेंस पॉइंट, उम्मीद की साइकोलॉजी है।

उम्मीद का साइकोलॉजिकल अनुभव। आप सच को कैसे परखते हैं? और उनका जवाब बस इतना है, अगर यह आपको उम्मीद का अनुभव देता है, उस तरह की संतुष्टि देता है, तो हम कहते हैं कि थ्योरी की कैश वैल्यू है। यह काम करता है।

और सच को वह बस काम करने की क्षमता के तौर पर बताते हैं। सच ही काम करने की क्षमता है। इसलिए, किसी विश्वास की साइकोलॉजिकल कैश वैल्यू से, वह सच की नई परिभाषा पर वापस आते हैं।

और वह ऐसा इस प्रैक्टिकल नज़रिए की वजह से कर सकता है कि अनुभव ही हमारी सच्चाई है। इसलिए हम जिस सच्चाई का अनुभव करते हैं, वह उम्मीद या बिना उम्मीद की सच्चाई है। और जब हम सच की बात करते हैं तो इसी का ज़िक्र होता है।

खैर, समय बीत गया है, लेकिन मैं इसे संक्षेप में बताऊंगा और अगली बार कुछ और उदाहरण दूंगा कि वह इसे कैसे लागू करते हैं, और फिर हम जॉन डेवी पर आएंगे।